इकाई 6 शिक्षक एवं शिक्षण*

संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 शिक्षक कौन होता है ?

6.4 शिक्षण, अनुदेशन एवं प्रशिक्षण की अवधारणाएं

- 6.4.1 शिक्षण
- 6.4.2 अनुदेशन
- 6.4.3 प्रशिक्षण

6.5 शिक्षकीय विशेशताएँ

- 6.5.1 विषय वस्तु प्रवीणता
- 6.5.2 शिक्षणशास्त्र का ज्ञान
- 6.5.3 शैक्षिक लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का ज्ञान
- 6.5.4 पाठ्यचर्या का ज्ञान
- 6.5.5 शैक्षिक संदर्भों का ज्ञान
- 6.5.6 शिक्षार्थियों एवं उनकी विशेषताओं का ज्ञान
- 6.5.7 अन्तर्वैयक्तिक ज्ञान

6.6 शिक्षण कौशल एवं दक्षताएं

- 6.6.1 शिक्षण कौशल
- 6.6.2 शिक्षण दक्षताएँ
- 6.6.3 व्यावहारिक पदों में उद्देश्यों की प्रस्तुति

6.7 शिक्षकों की विविध भूमिकाएं

- 6.7.1 अनुदेशन की योजना एवं निर्णयन
- 6.7.2 उत्पादक अधिगम परिवेश निर्माण तथा विद्यार्थी अभिप्रेरणा
- 6.7.3 कक्षाकक्ष प्रबंधन
- 6.7.4 पाठ्यचर्या प्रदायन
- 6.7.5 आकलन एवं मूल्यांकन
- 6.7.6 राष्ट्र निर्माण की भूमिका

6.8 शिक्षण एवं अधिगम में संबंध

- 6.8.1 चिन्तनशील शिक्षण

6.9 सारांश

6.10 इकाई अन्त अभ्यास

6.11 संदर्भ ग्रन्थ

6.12 आप की प्रगति जाँच के उत्तर

* प्रो० के०एस० जोसेफ, (अवकाश प्राप्त), शिक्षा विभाग, एम०एस० विश्वविद्यालय, बड़ौदा

6.1 प्रस्तावना

जब विद्यार्थी विद्यालय आते हैं तब वे सामाजीकरण के क्रम में बहुत कुछ सीख चुके होते हैं, परंतु विद्यालय तथा कॉलेज जैसे औपचारिक संगठनों को निपटने हेतु बहुत कुछ शेष रहता है। इन संगठनों का विद्यार्थियों को सभी आवश्यक ज्ञान, कौशलों तथा अभिवृत्तियों से युक्त करना दायित्व होता है। यह मुख्यतः शिक्षकों द्वारा शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया द्वारा किया जाता है। शिक्षक पेशेवर एवं विशेषज्ञ होते हैं। उनके पास कई विशिष्ट शिक्षण परिस्थितियों के विशय में सुसंगठित ज्ञान का समृद्ध भंडार होता है। इसमें उनके द्वारा पढ़ाया जाने वाला विशय, उनके विद्यार्थी, सामान्य शिक्षण रणनीतियाँ, शिक्षण की विषय–विशिष्ट विधियाँ, अधिगम हेतु परिस्थितियाँ, पाठ्यचर्या की विषयवस्तु तथा शिक्षा के लक्ष्यों का ज्ञान सम्मिलित है। शिक्षा के विद्यार्थी के रूप में आप को जानना चाहिए कि शिक्षक क्या होते हैं, कौन–सी विशेषतायें अन्य पेशेवरों से शिक्षकों को अलग करती हैं तथा शिक्षकों के रूप में वे कौन सी भूमिकाएँ निभाते हैं। इसके अतिरिक्त आप को कौशलों एवं दक्षताओं के साथ–साथ शिक्षण–अधिगम के संबंध को भी जानने की आवश्यकता है। प्रस्तुत इकाई शीर्षक ''शिक्षक एवं शिक्षण'' एक शिक्षक क्या होता है तथा कक्षाकक्ष में शिक्षण किस प्रकार किया जाता है, को समझने में आप की सहायता की दृष्टि से शिक्षक एवं शिक्षण से संबंधित कुछ आवश्यक विवरणों को आप को प्रदान करने का प्रयास करती है।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- एक शिक्षक क्या होता है, की व्याख्या करेंगे;
- शिक्षण, अनुदेशन तथा प्रशिक्षण की अवधारणाओं में निहित अंतरों को स्पष्ट करेंगे;
- शिक्षक की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेशताओं का नाम बताएंगे तथा व्याख्या करेंगे;
- शिक्षण कौशलों को स्पष्ट करेंगे;
- शिक्षण दक्षताओं की व्याख्या करेंगे;
- दक्षताएं कौशलों से किस प्रकार भिन्न हैं, को बताएंगे;
- शिक्षकों द्वारा निर्वाहित विभिन्न भूमिकाओं को सूचीबद्ध एवं व्याख्या करेंगे;
- शिक्षण एवं अधिगम में विद्यमान कुछ संबंधों को आलोकित करेंगे;
- चिन्तनशील शिक्षण को परिभाषित करेंगे; और
- चिन्तनशील शिक्षण की प्रक्रिया की व्याख्या करेंगे।

6.3 शिक्षक कौन होता है?

शिक्षक वे व्यक्ति होते हैं जिनमें शिक्षण एवं अधिगम में समस्याओं की समझ हेतु ज्ञान की विस्तृत पद्धतियाँ होती हैं। वे ऐसे विशेषज्ञ होते हैं जिन्हें शिक्षण एवं अधिगम के विभिन्न ज्ञान आधारों पर नियंत्रण होता है एवं अपनी कक्षाकक्ष अनुदेशन के विज्ञान एवं कला के मार्गदर्शन हेतु इस ज्ञान का उपयोग करते हैं। उनके शिक्षण के स्तर पर

आधारित उन्हें स्वयं द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषय में आवश्यक विषयवस्तु की विशेषज्ञता होती है। इसके अतिरिक्त उन्हें शिक्षण एवं अधिगम से संबंधित सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्षों के विषय में आवश्यक जागृति होती है। वे शिक्षा के आधारभूत पाठ्यक्रमों जैसे दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान के प्रासंगिक भागों को सैद्धांतिक ज्ञान के क्रम में ग्रहण कर लिए होते हैं। अनुदेशन से संबंधित व्यावहारिक पक्षों के संबंध में वे कक्षाकक्ष प्रबंधन के सिद्धांतों, प्रभावी शिक्षण एवं मूल्यांकन जैसे सामान्य शिक्षण रणनीतियों में सुप्रवीण होते हैं। इन सभी बातों के साथ एक आदर्श शिक्षक कक्षाकक्ष शिक्षण की कला एवं विज्ञान में विशेषज्ञ होता है।

विषयवस्तु एवं शिक्षणशास्त्रीय ज्ञान दोनों के अतिरिक्त एक शिक्षक विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के चयन, योजना, आयोजन एवं क्रियान्वयन में निपुण होता है। योजना हम क्या करना चाहते हैं, इसे कैसे किया जाए, और विद्यार्थियों से अपेक्षित सफलता या प्राप्ति की जानकारी किस प्रकार की जाय, को जानने के साथ किया जाना होता है। शिक्षक सामान्यतः तीन स्तर की योजना बनाते हैं– वार्षिक योजना, इकाई योजना तथा दैनिक पाठ योजना। वार्शिक योजना संपूर्ण शैक्षिक वर्ष में विषयवस्तु के समान वितरण पर ध्यान रखती है। इकाई योजना इकाई या पाठ को विश्लेषणात्मक रूप में देखती है, शिक्षण बिंदुओं का चयन करती है, शिक्षण उद्देश्यों एवं शिक्षण तथा मूल्यांकन की रणनीतियों को व्यक्त करती है। तत्पश्चात् इकाई योजना अधिकांश आवश्यक दैनिक पाठों में विभक्त की जाती है।

योजना के अतिरिक्त शिक्षकों के पास शिक्षण के अधिसंख्य कौशल, प्रविधियाँ, रणनीतियाँ तथा विधियाँ होती हैं। वे अपने शिक्षण में सक्रिय तथा निष्क्रिय प्रतिमानों का उपयोग करते हैं। विद्यार्थियों के सक्रिय अधिगम की सहायता हेतु वे प्रदत्त कार्य, परियोजना, मस्तिष्क उद्वेलन, विमर्श, खोज, पृच्छा आदि शिक्षार्थी केन्द्रित विधियों का प्रयोग करते हैं। जब वृहद मात्रा में सूचना प्रदान करनी होती है तब वे व्याख्यान या प्रदर्शन जैसी विधियों का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार विषयवस्तु तथा शिक्षण उद्देश्यों की प्रकृति के आधार पर वे अत्यधिक उपयुक्त विधि का उपयोग करते हैं जो प्रश्न में परिस्थिति के लिए उपयुक्त होती है।

शिक्षक न केवल योजना बनाते तथा शिक्षण करते हैं बल्कि वे शिक्षार्थियों के निष्पादन का मूल्यांकन भी करते हैं तथा उनके अधिगम में सुधार हेतु उनकी सहायता के आवश्यक उपचारी युक्तियों को भी अपनाते हैं। इन सभी के अतिरिक्त आदर्श शिक्षक अपने ज्ञान एवं कौशलों को अद्यतन करने हेतु सदैव प्रयासरत रहते हैं। वे सदैव बदलते समय की बदलती आवश्यकताओं के साथ गतिमान रहते हैं। उनके लिए अधिगम जीवनपर्यन्त होता है। वे न केवल अपने ज्ञान को अद्यतन करते हैं अपितु दैनिक रूप से अपनी अनुदेशनात्मक जागरूकता को उन्नत करने का प्रयास भी करते हैं। इस प्रयोजन हेतु वे अंतर्निरीक्षण करते हैं तथा अपनी त्रुटियों का पता लगाते हैं। वे अपने सहकर्मियों के शिक्षण का अवलोकन करते हैं तथा उन बिंदुओं का चयन करते हैं जो उनके अनुदेशन को उत्तम बनाते हैं। इस प्रकार एक आदर्श शिक्षक एक ऐसा व्यक्ति होता है जिसके पास यथासंभव उचित दिशा में अपने विद्यार्थियों को मोड़ने का ज्ञान तथा योग्यता होती है।

6.4 शिक्षण, अनुदेशन तथा प्रशिक्षण की अवधारणाएं

उपरोक्त वर्णित 'शिक्षक' शब्द वह व्यक्ति होता है जो विद्यालय में पढ़ाता है। यद्यपि अपने दैनिक जीवन में हम इस शब्द का प्रयोग अन्य संस्थानों में पेशेवरों जिनकी संगीत–शिक्षक, चालक–शिक्षक, खेल–शिक्षक इत्यादि के रूप में शैक्षिक भूमिकाएं हैं, को सम्मिलित करने हेतु व्यापक संदर्भ में भी कर सकते हैं। अतः इस शब्द का प्रयोग एक विशिष्ट अर्थ (विद्यालय शिक्षक) तथा एक अधिक सामान्य अर्थ जैसे कि कोई व्यक्ति कुछ सीखने में दूसरे व्यक्ति की सहायता करता है, दोनों अर्थों में किया जा सकता है। अतः (शिक्षक) शब्द सभी व्यक्तियों जैसे प्रशिक्षक, अनुदेशक तथा शिक्षक जो विद्यालयों के साथ–साथ महाविद्यालयों में पढ़ाते हैं के लिए हो सकता है।

6.4.1 शिक्षण

जब शिक्षण का प्रयोग विशिष्ट अर्थ में किया जाता है, तब प्रशिक्षण के लिए एक वृहद् समय तथा इससे संबंधित व्यावसायिक आचार संहिता की आवश्यकता होती है। एक शिक्षक रूप में आप दूसरों को पढ़ा, प्रशिक्षित या अनुदेशित कर सकते हैं। ये सभी विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक संरचना में परिवर्तन लाने के लिए किया जाता है। यद्यपि वे अपने अर्थ में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन को सम्मिलित करते हैं। शिक्षण शब्द का अर्थ किसी व्यक्ति के कार्यों से है, जो किसी व्यक्ति के विकास के सभी पक्षों में उसकी संपूर्ण क्षमता की पहुँच हेतु उसकी सहायता का प्रयास करता है। शिक्षण तब परिणामी होता है, जब एक शिक्षक इस संकल्प के साथ कोई गतिविधि करता है कि जिससे उसके विद्यार्थी इसके परिणाम के रूप में कुछ सीखेंगे। उदाहरण के लिए जब वह अपने विद्यार्थियों को एक गणितीय समस्या समाधान हेतु एक वैज्ञानिक सिद्धांत या प्रक्रिया को समझाता है, तथा अपेक्षा करता है कि उसके विद्यार्थी इसे सीखेंगे, शिक्षण के परिणाम हेतु विद्यार्थियों को एक पठन अवतरण देता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुदेशन द्वारा या पुस्तकों, फिल्मों इत्यादि द्वारा अप्रत्यक्ष रूप में शिक्षण हो सकता है। शिक्षण इंटरनेट या टेलीविजन के प्रयोग द्वारा ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से भी किया जा सकता है। शिक्षण विमर्शों, मुक्तांत प्रश्नों के पूछने तथा सक्रिय सहभागिता द्वारा ज्ञानार्जन के माध्यम से अधिगम के सहायता की प्रक्रिया है।

6.4.2 अनुदेशन

शिक्षण से तुलना करने पर अनुदेशन, शिक्षक द्वारा प्रदत्त कुछ करने हेतु प्रक्रिया होती है। यदि एक शिक्षक किसी कक्षा में गणितीय समस्या समाधान कार्य को पूर्ण करने हेतु चरणबद्ध अनुदेशन प्रदान कर रहा है, तो यह अनुदेशन का एक उदाहरण है। शिक्षक सक्रिय होता है, जब शिक्षार्थी शिक्षक का अनुकरण करने हेतु अपेक्षित होते हैं। इसमें शिक्षण एवं प्रबंधन दोनों सम्मिलित होते हैं। वे इतने अच्छे से समन्वय बनाते हैं, कि यह कहना कठिन है कि एक दूसरे से अलग हैं। शिक्षक द्वारा कक्षाकक्ष में एक प्रश्न को पूछना शिक्षण कार्य कहलाता है, जबकि इसके उत्तर को एक ही विद्यार्थी के लिए प्रतिबंधित करना कक्षाकक्ष प्रबंधन का अंग होता है। इसी प्रकार विद्यार्थियों के एकाग्र व्यवहार की पहचान करना, विचलित व्यवहार का प्रबंधन करना, विद्यार्थी की आवश्यकताओं की पहचान करना इत्यादि जो शिक्षण के साथ होते हैं, शिक्षण के दौरान सभी प्रबंधन प्रक्रिया के अंग होते हैं। प्रभावी अनुदेशन में प्रबंधन तकनीक तथा शिक्षण विधियाँ दोनों के प्रभावी उपयोग शामिल हैं।

6.4.3 प्रशिक्षण

प्रशिक्षण शब्द का प्रयोग सामान्यतः सैद्धांतिक प्रकृति के बजाय प्रायोगिक कार्य के लिए होता है, यद्यपि यह स्वयं में सैद्धांतिक विशय वस्तुओं की एक महत्त्वपूर्ण मात्रा को सम्मिलित करता है। जैसा कि हम जानते हैं कि प्रशिक्षण सैद्धांतिक पक्षों की अनुपस्थिति में नहीं किया जा सकता है। यद्यपि प्रशिक्षण का केन्द्र–बिंदु एक विशिष्ट कार्य या व्यवसाय हेतु शिक्षार्थी को तैयार करने पर होता है। इस प्रक्रिया को प्रशिक्षण का नाम दिया जाता है। उदाहरण के लिए शिक्षकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण या सेवापूर्व–प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। शिक्षण तथा अनुदेशन प्रशिक्षण की तुलना में अधिक शैक्षिक हैं, जबकि प्रशिक्षण कौशलों तथा दक्षताओं की विशेषज्ञता से संबंधित हैं।

जैसा कि आप अब तक ध्यान दिए होंगे कि यद्यपि शिक्षण, अनुदेशन तथा प्रशिक्षण के अर्थ में कुछ भिन्नताएँ हैं। परंतु तीनों की केन्द्रीय प्रक्रिया में अधिगम है।

अपनी प्रगति की जाँच करें (1)

नोट : (अ)अपने उत्तरों को दिए गये प्रत्येक विषय के पश्चात् रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब)अपने उत्तरों की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से कीजिए।

1. निम्नलिखित अवधारणाओं को एक वाक्य में परिभाशित कीजिए।

अ) शिक्षण

.....

.....

.....

.....

.....

ब) अनुदेशन

.....

.....

.....

.....

.....

स) प्रशिक्षण

.....

.....

.....

.....

.....

2. शिक्षण अनुदेशन से किस प्रकार भिन्न है?

.....

.....

.....

.....

.....

3. प्रशिक्षण किस पर केन्द्रित होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

6.5 शिक्षकीय विशेषताएं

हम पहले ही देख चुके हैं कि एक शिक्षक क्या होता है तथा किस प्रकार शिक्षण, अनुदेशन तथा प्रशिक्षण एक–दूसरे से भिन्न होते हैं। एक शिक्षक का कर्तव्य विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, सांवेगिक तथा नैतिक विकास में सहायता करना है ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके। केवल जब शिक्षकों के पास आवश्यक ज्ञान तथा कौशल होतें हैं, वे एक विशाल कार्य करने की स्थिति में होंगे। आदर्श एवं प्रभावी शिक्षक कुछ विशेषताओं से पूर्ण होतें हैं। इन कुछ विशेषताओं को लिया जाय तथा उनको कुछ सीमा तक वर्णित किया जाए।

6.5.1 विषयवस्तु प्रवीणता

शिक्षक द्वारा पढ़ाये जाने वाले विषय की विषय वस्तु की प्रवीणता या गहन ज्ञान आदर्श शिक्षक का एक महत्त्वपूर्ण गुण होता है। जैसा कि आपने ध्यान दिया होगा कि प्रत्येक विषय कई महत्त्वपूर्ण प्रकरणों से बना होता है। उनमें से प्रत्येक को क्रमशः अधिसंख्य उपप्रकरणों में विभक्त किया जा सकता है तथा इनको उचित उदाहरणों द्वारा समझाया जा सकता है। जब एक शिक्षक विषय क्षेत्र में सभी प्रमुख प्रकरणों तथा उपप्रकरणों तथा अंतर्संबंधों, जो इकाई के रूप में उनको एक साथ संगठित करता है को जानता है तब उसे विषयवस्तु की प्रवीणता होना माना जाता हैं। यह शिक्षक की अधिकारपूर्ण विषय को पढ़ाने में सहायता करेगा।

6.5.2 शिक्षणशास्त्र का ज्ञान

एक आदर्श शिक्षक को विशेषित करने वाला अन्य गुण उसका शिक्षणशास्त्रीय ज्ञान है। यह शिक्षण को एक व्यावसायिक अभ्यास के रूप में तथा शैक्षिक अध्ययन के क्षेत्र रूप

में वर्णन करता है। शिक्षण–शास्त्र शिक्षण के व्यावहारिक अनुप्रयोग का ही नहीं अपितु पाठ्यचर्यागत मुद्दों तथा अधिगम होने इत्यादि संबंधित सिद्धांत के निकाय का वर्णन करता है। यह परंपरागत वर्णात्मक विधियों जैसे व्याख्यान तथा प्रदर्शन, विद्यार्थी–केंद्रित विधियों जैसे परियोजना, प्रदत्त कार्य, कार्यक्रमित अधिगम, विषय वस्तुओं तथा समूह–केंद्रित विधियों, परिचर्चा, सेमिनार, भूमिका निर्वाह इत्यादि का वर्णन करता है। इनके अतिरिक्त शिक्षण शास्त्र प्रिंटमीडिया, मानव अंतःक्रियात्मक मीडिया, श्रव्य–दृश्य माध्यम तथा प्रतिकृति जैसे व्यापक माध्यमों का भी वर्णन करता है। इसके अतिरिक्त शिक्षणशास्त्र अनुदेशन की सहायता हेतु सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर इत्यादि विभिन्न उपकरणों के उपयोग करने को प्रदर्शित करता है। इसलिए शिक्षण–शास्त्र का ज्ञान किसी प्रभावी शिक्षक के लिए एक महत्त्वपूर्ण विशेषता होती है।

6.5.3 शैक्षिक लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का ज्ञान

विषयवस्तु एवं शिक्षणशास्त्र के ज्ञान के अतिरिक्त सामान्यतः प्रदर्शित शिक्षकों की अन्य विशेषता शिक्षा के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के प्रति उनका ज्ञान है। अनुदेशनात्मक उद्देश्य सामान्यतः तीन स्तरों पर प्रदर्शित होते हैं – (अ) तात्कालिक उद्देश्य (ब) मध्यम उद्देश्य (स) सुदूर उद्देश्य। तात्कालिक उद्देश्य विद्यार्थियों को सतत् उपलब्धि की भावना के साथ सम्मिलित रखने हेतु अपेक्षित होते हैं। मध्यम उद्देश्य यह उद्घाटित करते हैं कि प्रतिदिन शिक्षण के अन्त में विद्यार्थियों से अपेक्षित निष्पादन क्या हैं। सूदूर उद्देश्य यह दर्शाते हैं कि विद्यार्थी भविष्य में क्या प्राप्त करने की आशा रखते हैं। लक्ष्य एवं उद्देश्य मार्गदर्शक की तरह होते हैं। वे विभिन्न अनुदेशनात्मक गतिविधियों हेतु मार्गदर्शन एवं दिशानिर्देश प्रदान करते हैं। इनकी अनुपस्थिति में भ्रम एवं अव्यवस्था हो सकती है। लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का ज्ञान शिक्षकों को विभिन्न अनुदेशनात्मक गतिविधियों को व्यवस्थित रूप में योजना, आयोजन तथा क्रियान्वयन करने में सहायता करता है। यह उनको समय तथा ऊर्जा के विनाश से बचने में भी सहायता प्रदान करता है।

6.5.4 पाठ्यचर्या का ज्ञान

पाठ्यचर्या का अर्थ विद्यार्थियों हेतु शिक्षा के लिए निर्मित विषय वस्तु एवं गतिविधियों की संपूर्ण सूची है। सुविधा के लिए इस संपूर्ण सूची को विज्ञान, गणित आदि विशयों के रूप में विभक्त किया जाता है। पदों की इस विषयवार सूची को पाठ्य वस्तु कहा जाता है। पाठ्यचर्या की तरह इसमें चयनित एवं संगठित विषयवस्तु, लक्ष्य एवं उद्देश्य पाठ्य–वस्तु के प्रदायन हेतु तकनीक एवं विधियाँ तथा मूल्यांकन हेतु सुझाव होते हैं। पाठ्यचर्या एवं पाठ्यवस्तु यह बताते है कि एक आदर्श विद्यार्थी को क्या सीखना चाहिए। यह ज्ञान शिक्षकों को दिए हुए मार्गदर्शनों को कठोरता–पूर्वक अनुकरण करने तथा भ्रम दूर करने में सहायता करता है।

6.5.5 शैक्षिक संदर्भों का ज्ञान

शिक्षकों की अन्य विशेशता शिक्षण के प्रयोजन हेतु विभिन्न शैक्षिक संदर्भों को अवस्थित तथा प्राप्त करने हेतु उनकी क्षमता है। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के अतिरिक्त अधिसंख्य अनौपचारिक तथा निरौपचारिक अभिकरण हैं जो अधिगम के संदर्भों को प्रदान कर सकते हैं। प्रत्येक समाज में विभिन्न शैक्षिक अभिकरण जैसे संग्रहालय, चिड़ियाघर, कला वीथिकाएं, स्वशासी निकाय, सहकारी संगठन होते हैं जिनमें वृहद् शैक्षिक संभावनाएं होती हैं। इसी प्रकार वृहद संख्या में ज्ञानी व्यक्तियों जैसे विभिन्न

संगठनों में प्रशिक्षण कर्मचारी, सामाजिक कार्यकर्ता, चिकित्सक तथा अन्य व्यक्ति हैं जिनके पास विद्यार्थियों हेतु उपयोगी विशिष्ट ज्ञान तथा कौशल होते हैं। यह ज्ञान शिक्षकों को उनके अधिकतम सामर्थ्य तक अवस्थित तथा संप्राप्ति हेतु सक्षम करेगा। विद्यार्थी की उत्कृष्टता में वृद्धि हेतु सामुदायिक संसाधनों के उपयोग की यह विधि शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष होता है।

6.5.6 शिक्षार्थियों एवं उनकी विशेषताओं का ज्ञान

प्रत्येक आदर्श शिक्षक को अपने विद्यार्थियों एवं उनकी विशेषताओं की स्पष्ट समझ होती है। कोई भी शिक्षक तब तक प्रभावी नहीं हो सकता है जब तक वह अपने विद्यार्थियों को संपूर्ण रूप से नहीं जान लेता है। योजना के साथ अग्रसर होना निरर्थक है जब तक कि वह नहीं जानता है कि उसके विद्यार्थी अपने अधिगम के संबंध में कहाँ हैं। उसके पास प्रत्येक विद्यार्थी हेतु प्रयोगात्मक रूप से यथार्थ रूप–रेखा होनी चाहिए। यह उसे उपचारी एवं संवृद्धिक विधियों के साथ सफल होने में सक्षम करेगा। इस सक्षमता की अनुपस्थिति में कोई भी अनुदेश प्रभावी नहीं हो सकता है।

6.5.7 अन्तर्वैयक्तिक ज्ञान

प्रत्येक प्रभावी शिक्षक के पास अन्तर्वैयक्तिक तथा अन्तरावैयक्तिक ज्ञान का आवश्यक स्तर होता है। उसका अन्तर्वैयक्तिक ज्ञान उसके विद्यार्थियों, शैक्षिक समुदाय, अभिभावक तथा समुदाय में उत्तम संबंध बनाये रखने में उसको सक्षम करेगा। लोगों को जानना उनके साथ प्रभावी रूप में अंतःक्रिया करने के पूर्व आवश्यकता होती है। किसी व्यक्ति को जानने का अर्थ उसके मूल्यों एवं स्वभावों को जानना होता है। यह ज्ञान शिक्षकों को जितनी बार संभव हो, सभी के साथ अंतःक्रिया करने के योग्य बनाएगा तथा उनकी आन्तरिक अभिप्रेरणाओं को जानने की विधियों हेतु सक्षम करेगा। यदि शिक्षक संसाधनों को चयनित, पृच्छा हेतु मुक्तांत अवसरों को निर्मित करने तथा जीवन के अनुभवों तथा विद्यालयी अनुभवों के मध्य संपर्क स्थापित करने वाले हैं तब शिक्षकों को अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि की आवश्यकता है।

अब तक हमनें अधिसंख्य विशेशताओं तथा अनुदेशन की प्रक्रिया में वे किस प्रकार उपयोगी हैं, पर संक्षिप्त विमर्श कर लिया है। आप समझ चुके होंगें कि एक आदर्श शिक्षक बनना कहने में सरल तथा करने में कठिन है। इसकी प्राप्ति एक रात में नहीं हो सकती है। शिक्षण में उत्कृष्टता विकासात्मक होती है। अच्छे पेशेवर तथा अन्तर्वैयक्तिक ज्ञान के निर्माण में कई वर्षों का समय लगता है। उत्कृष्टता केवल तब आती है, जब शिक्षकों को ज्ञान के विभिन्न आधारों में गहन अंतर्सूझ होती है।

अपनी प्रगति की जाँच करें (2)

नोट : (अ)अपने उत्तरों को दिए गये प्रत्येक विषय के पश्चात् रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब)अपने उत्तरों की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से कीजिए।

1. निम्नलिखित अवधारणाओं को एक वाक्य में परिभाषित कीजिए।

अ) लक्ष्य

.....

.....

.....

.....

.....

ब) पाठ्यचर्या

.....

.....

.....

.....

.....

स) शिक्षणशास्त्र

.....

.....

.....

.....

.....

2. विषय वस्तु प्रवीणता (विशेशज्ञता) का क्या अर्थ होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3. एक आदर्श शिक्षक की किन्हीं पाँच विशेषताओं के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4. अन्तर्वैयक्तिक ज्ञान होने के किन्हीं दो लाभों को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.6 शिक्षण कौशल एवं दक्षताएँ

शिक्षण प्रक्रिया सामान्यतः कई चरणों या स्तरों को सम्मिलित करती है, जैसे योजना, विशयवस्तु की प्रस्तुति, अभ्यास, आकलन एवं मूल्यांकन तथा गृहकार्य प्रदान करना।

6.6.1 शिक्षण कौशल

शिक्षक शिक्षण हेतु विभिन्न कौशलों का प्रयोग करते हैं। इन कौशलों के प्रयोग की विधि के आधार पर इनकों तीन शीर्षकों में रखा जाता है–

(i) पूर्वअनुदेशनात्मक कौशल (ii) अनुदेशनात्मक कौशल (iii) पश्चअनुदेशनात्मक कौशल

i) पूर्वअनुदेशनात्मक कौशल
   a) शिक्षण की विशयवस्तुओं का चयन तथा तर्कपूर्ण संयोजन
   b) अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को व्यक्त करना
   c) उपयुक्त शिक्षण सामग्रियों का चयन

ii) अनुदेशनात्मक कौशल
   a) पाठप्रस्तुति कौशल
   b) व्याख्या एवं दृष्टांत कौशल
   c) पुनर्बलन कौशल (व्यवहार को सबल करने हेतु परिणामों का उपयोग)
   d) प्रश्न एवं खोज कौशल
   e) मौन उपयोग कौशल (कुछ क्षणों हेतु शिक्षक के मौन का उपयोग करना जो विद्यार्थी के समक्ष प्रश्न को रखना प्रत्युत्तर कहलाता है। इसे ''प्रतीक्षा समय'' कहते हैं।)
   f) समापन कौशल (कक्षा के दौरान पढ़ाये गये का सारांश कार्य)

iii) पश्चअनुदेशनात्मक कौशल
   a) मूल्यांकन (पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के विषय में परीक्षण एवं जाँच)
   b) उपचारी युक्तियों की योजना
   c) गृहकार्य देना

उपरोक्त कुछ कौशल हैं जिन्हें शिक्षक अनुदेशनात्मक प्रयोजनों हेतु सामान्यतः उपयोग करते हैं। शिक्षकीय दक्षता एवं प्रभाविता अधिकांशतः इस पर निर्भर करती है कि किस प्रकार शिक्षक इन कौशलों में निपुण हैं।

6.6.2 शिक्षण दक्षताएं

जब शिक्षक पढ़ाते हैं, उनके मन में यह लक्ष्य सदैव रहता है कि वे किसके लिए पढ़ा रहें हैं। लक्ष्य शैक्षिक कार्यक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थियों द्वारा प्राप्ति के योग्य होने का सामान्य कथन होता है। शिक्षक सामान्यतः साधन समापन विश्लेषण प्रक्रिया का अनुकरण लक्ष्य की प्राप्ति हेतु करते हैं। वे लक्ष्य को दक्षताओं में विभक्त करते हैं और तब प्रत्येक दक्षता को क्रमशः मौलिक कौशलों में विभक्त करते हैं। उदाहरण के लिए कक्षा–कक्ष में अंग्रेजी शिक्षण में एक अंग्रेजी शिक्षक का लक्ष्य अंग्रेजी में दक्षता की प्राप्ति हेतु शिक्षार्थियों की सहायता करना है। इसी प्रकार एक क्रिकेट कोच का लक्ष्य अपने प्रशिक्षुओं को उत्कृष्ट क्रिकेटर बनाना होता है। अपने लक्ष्य की प्राप्ति में वे पहला कार्य यह करते हैं कि वे लक्ष्यों को उप–लक्ष्यों या दक्षताओं में विभक्त करते हैं।

दक्षता एक कथन होती है, जो विशिष्ट कौशलों के मिश्रण को दृश्यमान प्रदर्शन का वर्णन करता है। उपरोक्त वर्णित अंग्रेजी शिक्षण का लक्ष्य अंग्रेजी में निपुणता प्राप्त करना है। अंग्रेजी शिक्षक इसे श्रवण दक्षता, बोलने की दक्षता, पठन दक्षता तथा लेखन दक्षता जैसी दक्षताओं में विभक्त करता है। तत्पश्चात् शिक्षक श्रवण कौशल को विभक्त करता है। उदाहरण के लिए विशिष्ट कौशलों जैसे उच्चरित शब्दों की पहचान एवं समझ, अज्ञात शब्दों एवं मुहावरों का अनुमान करना, शाब्दिक एवं भावार्थ में अंतर करना, प्रासंगिक बिंदुओं की पहचान करना तथा अप्रासंगिक को अस्वीकार करना, संदेश की प्राप्ति हेतु अशाब्दिक संकेतों का प्रयोग इत्यादि इसी प्रकार, क्रिकेट कोच उत्कृष्टता के लक्ष्य को क्रिकेट में गेंदबाजी, बल्लेबाजी और क्षेत्ररक्षण (फील्डिंग) जैसी दक्षताओं में विभक्त करता है। तत्पश्चात् वह गेंदबाजी की दक्षता को इसके घटक कौशलों जैसे गेंद को हाथ में पकड़ने, रनिंगमार्क पर फेंकने, गेंद को थ्रोइंग बिंदु तक ले जाने, हाथ को उठाने तथा स्टंप पर गेंद को सीधे घुमाते हुए भेजने, में विभक्त करता है/करती है।

यदि आप शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया को विश्लेषणपूर्वक देखते हैं तब आप यह आसानी से प्राप्त कर सकते हैं कि इसमें वृहद् संख्या में दक्षताएं सम्मिलित हैं। विषय वस्तु का ज्ञान, पढ़ाये जाने वाले विषय–वस्तु की विश्लेषण की क्षमता, विषय–वस्तु को श्रेणीबद्ध करने का कौशल, स्पष्ट शब्दों में अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को व्यक्त करने की क्षमता, आवश्यक पुनर्बलन देना, स्पष्टता के साथ प्रवाह युक्त संप्रेषण की क्षमता, शिक्षार्थी उपलब्धि के आकलन की योग्यता शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया में सम्मिलित कुछ प्रमुख दक्षताएँ हैं। अधिसंख्य वैयक्तिक कौशलों के अधिगम का महत्त्व बहुत कम है जब तक कि निष्पादन के समग्र में संयुक्त तथा अंतर्संबंधित नहीं किया जाता है, जो वैयक्तिक कौशलों के योग्य से अधिक होता है। वर्तमान समय में शिक्षक को विभिन्न ऑनलाईन शिक्षण प्लेटफार्मों के उपयोग की तकनीकी दक्षता की भी आवश्यकता है।

6.6.3 व्यावहारिक पदों में उद्देश्यों की प्रस्तुति

हमने कुछ सीमा तक विमर्श किया है कि शिक्षण कौशल तथा दक्षताएं क्या हैं। अब व्यावहारिक पदों में उद्देश्यों को रखने पर संक्षिप्त विमर्श किया जाए। यदि उद्देश्यों को अर्थपूर्ण होना है, तब उनको इस प्रकार रखने की आवश्यकता है कि शिक्षक का अनुदेशनात्मक आशय स्पष्ट हो जाए। उनको जानिए, समझिये, स्वीकार कीजिए,

विश्वास कीजिए आदि जैसे शब्दों का प्रयोग करते हुए नहीं प्रस्तुत किया जाना चाहिए, क्योंकि वे हम लोगों को अवलोकन या मापन नहीं करने देंगें। अतः हमें अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को व्यक्त करने हेतु केवल सूचीबद्ध कीजिए, पाठ कीजिए, पहचान कीजिए, अंतर स्पष्ट कीजिए, समाधान कीजिए, तुलना कीजिए, भिन्नता बताइए, आदि शब्दों का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि वे ऐसे शब्द हैं, जो कार्यों को व्यक्त करते हैं, जो दृश्यमान तथा मापनीय होते हैं। उदाहरण के लिए अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को अग्रलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है – ''शिक्षार्थी मस्तिष्क कार्यों की तुलना कंप्यूटर के कार्यों से करने में योग्य होंगे'', या '' क्रियाओं एवं संज्ञाओं की दी गई एक सूची से विद्यार्थी क्रिया तथा संज्ञा में अंतर स्पष्ट करने के योग्य होंगे''। यदि उद्देश्यों को व्यावहारिक पदों में रखा जाता है तो यह शिक्षक एवं विद्यार्थियों दोनों के लिए लाभदायक होगा। यह शिक्षक के लिए आकलन को सरल तथा विद्यार्थियों के लिए अधिगम को सरल बनाएगा चूँकि यह शिक्षक के अनुदेशन आशय को अधिक स्पष्ट एवं सार्थक बनाता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें (3)

नोट : (अ)अपने उत्तरों को दिए गये प्रत्येक विषय के पश्चात् रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब)अपने उत्तरों की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से कीजिए।

1. निम्नलिखित शब्दों को एक–एक वाक्यों में परिभाशित कीजिए।

अ) दक्षता

.....

.....

.....

.....

.....

ब) प्रतीक्षा समय

.....

.....

.....

.....

.....

स) समापन

.....

.....

.....

.....

2. किन्हीं दो पूर्वअनुदेशनात्मक कौशलों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3. अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को व्यवहारिक पदों में रखने के लाभों के विषय में आप क्या सोचते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6.7 शिक्षकों की विविध भूमिकाएं

शिक्षक बच्चों के जीवन को निर्मित करने के लिए नियुक्त होते हैं। उनसे बच्चों के सर्वांगीण विकास को करने की अपेक्षा होती है। अतः शिक्षकों को शिक्षार्थियों के बौद्धिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक तथा संवेगाात्मक विकास पर ध्यान देना होता है। अतः शिक्षकों को विविध भूमिकाएँ निर्वाह करना होता है। इनमें कुछ भूमिकाएँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, जिन्हें शिक्षा के विद्यार्थी के रूप में आपको इनमें से कुछ को जानना चाहिए। अब इन कुछ भूमिकाओं को लिया जाए तथा उनका संक्षिप्त वर्णन किया जाए।

6.7.1 अनुदेशन की योजना एवं निर्णयन

योजना एवं निर्णयन ऐसी प्रक्रियाएँ है जिसमें गूढ़ समझ एवं कौशलों की आवश्यकता होती है। योजना के क्रम में शिक्षकों को पढ़ायी जाने वाली विषय वस्तु, इसे क्यों और कैसे पढ़ाया जाए तथा यह जानना कि विद्यार्थी सफल हुए हैं या नहीं, का निर्णय करना होता है। अन्य शब्दों में उनको शिक्षण हेतु प्रयोग की क्रमिक प्रक्रिया को विकसित करना, विद्यार्थियों के चरों का ध्यान तथा संसाधनों एवं सुविधाओं की उपलब्धता का ध्यान देना होता है ताकि पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति को अग्रसर किया जा सके। वास्तव में शिक्षक शिक्षण हेतु कक्षा–कक्ष में प्रवेश से पूर्व अपने योजना निर्माण को आरंभ करते हैं। सामान्यतः वे तीन स्तर की योजना बनाते हैं– वार्षिक योजना, इकाई योजना तथा दैनिक पाठ योजना। शिक्षक जानते हैं कि योजना की अनुपस्थिति में शिक्षण, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों दोनों हेतु नकारात्मक परिणामों के साथ अव्यवस्थित एवं असंगठित हो सकता है। योजना, विद्यार्थी अधिगम तथा कक्षा–कक्ष जीवन के संपूर्ण प्रवाह या गति दोनों के लिए आवश्यक है। योजना कक्षा–कक्ष की गतिविधियों हेतु दिशानिर्देश की समझ भी प्रदान करती है। यह बिना किसी व्यवधान के कक्षा–कक्ष के सुचारू रूप से संचालन में सहायता भी करेगी।

6.7.2 उत्पादक अधिगम परिवेश निर्माण तथा विद्यार्थी अभिप्रेरणा

योजना के अतिरिक्त अन्य महत्त्वपूर्ण भूमिका जिसका शिक्षकों द्वारा निर्वाह किया जाता है, वह उत्पादक कक्षा–कक्ष परिवेश का निर्माण तथा विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करना है। अधिगम केवल तभी हो सकता है, जब कक्षा–कक्ष में बौद्धिक परिवेश होता है। यदि शिक्षक ही सदैव वार्तालाप करता रहे, प्रक्रियाओं में सम्मिलित होने हेतु विद्यार्थियों को कदाचित ही अवसर प्रदान करे तब विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से ऊबन का अनुभव करेंगे। इसके बदले यदि शिक्षक विद्यार्थियों को स्वायत्ता, सहभागिता तथा सम्मिलित होने का अधिक अवसर प्रदान करता है तब कक्षा सक्रिय तथा जीवंत होगी। शिक्षक परिचर्चा, भूमिका–अभिनय, प्रदतकार्य, परियोजना, मस्तिष्क उद्वेलन, इत्यादि जैसी अधिगम की सक्रिय विधियों का भी प्रयोग कर सकते हैं। इसके साथ विद्यार्थियों को भी स्वयं के उपहास या दंड के भय के बिना स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचारों को अभिव्यक्त करने हेतु अवसर दिए जाएंगे। वे वास्तविक तथा सुलभ लक्ष्यों को निर्धारित कर तथा समूहों में उनके कार्य में सहायता द्वारा विद्यार्थियों के सरोकारों पर ध्यान भी देते हैं। उत्पादक परिवेश के निर्माण के अतिरिक्त शिक्षक विद्यार्थियों को उत्कृष्ट अधिगम हेतु प्रेरित भी करते हैं। विद्यार्थियों के पास उपलब्धि, प्रसिद्धि, संबद्धता, शक्ति इत्यादि की आवश्यकता जैसे लक्ष्य होते हैं। प्रभावी शिक्षक विद्यार्थियों को उनके प्रयोजनों को पहचान कर उन्हें प्रेरित करने का प्रयास करते हैं जिसमें उच्च अभिप्रेरण बल होता है। अतः वे विद्यार्थियों को उनके अधिगम कार्यों में उचित प्रयास तथा ऊर्जा लगाने में सहायता करते हैं तथा उत्तम परिणाम लाते हैं।

6.7.3 कक्षा–कक्ष प्रबंधन

कक्षा–कक्ष प्रबंधन कक्षा–कक्ष अनुदेशन का एक अभिन्न अंग होता है। इसे कक्षा–कक्ष में अधिगम–सुधार हेतु विद्यार्थी अवधान के आवश्यक परिवर्तन के साथ किया जाना होता है। कक्षा–कक्ष प्रबंधन का सरोकार कक्षा–कक्ष के अंदर शांति व्यवस्था बनाये रखना होता है। किसी कारणवश कक्षा–कक्ष में व्यवधान तथा अव्यवस्था होती है, तब कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता है। इस तरह का कक्षा–कक्ष शिक्षक तथा विद्यार्थियों दोनों को विचलित कर सकता है। यह विद्यार्थियों को कक्षा–कक्ष गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करने से रोकता है तथा उनकी संपूर्णतम क्षमताओं की प्राप्ति से उनको रोकता है। प्रभावी शिक्षक अपने कक्षा–कक्ष प्रबंधन में उनकी सहायता हेतु बहुत सी विधियों एवं तकनीकों का उपयोग करते हैं। वे प्रयोजन हेतु संकेत व्यवस्था का विकास एवं उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए जब एक विद्यार्थी एक प्रश्न का उत्तर देना चाहता है, वह अपना हाथ उठाता है। वे प्रयोगशाला या खेल के मैदान में जाने अर्थात् क्रम से जाने के नियम तथा प्रावधानों को भी स्थापित करते हैं। शिक्षक कक्षा में विभिन्न स्थानों पर बैठने की व्यवस्था कर संभावित समूह निर्माण को भी भंग करते हैं। वे लम्बे व्याख्यान तथा शिक्षण बिंदुओं पर अधिक समय लगाने से भी बचते हैं। वे अधिगम की सक्रिय विधियों का भी सहारा लेते हैं। संक्षेप में प्रभावी शिक्षक एक ऐसे कक्षा–कक्ष परिवेश के निर्माण का प्रबंधन करते हैं, जहाँ वे शिक्षण कर सकते हैं तथा विद्यार्थी अधिगम कर सकते हैं।

6.7.4 पाठ्यचर्या प्रदायन

योजना, उत्पादक परिवेश के निर्माण तथा अभिप्रेरण, कक्षा–कक्ष प्रबंधन के अतिरिक्त शिक्षक की अन्य महत्त्वपूर्ण भूमिका शिक्षण या पाठ्यचर्या प्रदायन होती है। हाल के

दिनों में शिक्षक सामान्यतः शिक्षण हेतु व्याख्यान एवं प्रदर्शन जैसी वर्णनात्मक विधियों का प्रयोग करते थे। परंतु अब इसके विपरीत हम यह मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्व ज्ञान के साथ अपने वर्तमान ज्ञान को एकीकृत कर अपने स्वयं के ज्ञान एवं कौशलों का निर्माण करता है। अतः अब शिक्षण को एक अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी दोनों सक्रिय रूप से सम्मिलित रहते हैं। अतः आजकल शिक्षक परियोजना, प्रदत्तकार्य, भूमिका निर्वाह, मस्तिष्क उद्वेलन, परिचर्चा आदि विद्यार्थी केन्द्रित विधियों का प्रयोग करते हैं। समकालीन शिक्षक उन शिक्षण अभ्यासों के उपयोग हेतु उत्तरदायी हैं जो प्रभावी होना प्रतीत होते हैं। वे वैज्ञानिक आधारों वाले अभ्यासों का उपयोग करते हैं। वे शैक्षिक तथा देख–भाल युक्त परिवेश का निर्माण तथा पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्य करने के लिए विद्यार्थी की ऊर्जा को क्रियाशील भी करते हैं। परिणामस्वरूप विद्यार्थी समीक्षात्मक चिंतन की क्षमता तथा स्वतंत्रत खोज करने की योग्यता विकसित करते हैं। इस प्रकार सक्रिय अधिगम के परिणाम स्वरूप विद्यार्थी ज्ञान एवं कौशलों का निर्माण करते हैं, जो निष्क्रिय अधिगम यह प्रयास नहीं कर सकता है।

6.7.5 आकलन एवं मूल्यांकन

आकलन एवं मूल्यांकन शिक्षण के अभिन्न अंग हैं। जो शिक्षक योजना, शिक्षण तथा कक्षा–कक्ष प्रबंधन में विपुल ऊर्जा एवं समय व्यतीत किये हैं, उन्हें यह जानना चाहिए की उनके प्रयास अपेक्षित परिणाम उत्पन्न किये हैं या नहीं। मूल्यांकन में तीन पद सम्मिलित होते हैं– (i) परीक्षण (ii) मापन तथा (iii) मूल्यांकन। परीक्षण सामान्य तकनीक है जिसे शिक्षक विद्यार्थियों के अधिगम को जानने हेतु सूचना संग्रहण हेतु उपयोग करते हैं। परीक्षण प्रश्नों या निष्पादन कार्यों के एक युग्म से निर्मित होता है, जिसका उत्तर विद्यार्थी देते हैं। परीक्षण का परिणाम विद्यार्थियों की विशेषताओं को प्रदर्शित करता है। परीक्षण के अतिरिक्त शिक्षक सूचना–संग्रहण हेतु साक्षात्कार, निर्धारणमापनी, जाँच सूची, जैसी अन्य तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं। मापन, आकलन किये जा रहे के लिए आंकिक सूची या क्रम प्रदान करना होता है। मूल्यांकन, मापन किये जाने वाले पर एक निर्णय होता है। ग्रेड का प्रदायन एक मूल्यांकन कार्य होता है। अतः यह निर्णय करने का कार्य है कि कोई व्यक्ति उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण हुआ है।

मूल्यांकन का प्रयोजन कई हो सकता है। यह विद्यार्थी–व्यवहार में परिवर्तन के आकलन के लिए तथा उनकी मजबूतियों एवं कमजोरियों के निदान हेतु हो सकता है। यह प्रतिपुष्टि हेतु अवसर भी प्रदान कर सकता है तथा सुधार हेतु विधियों एवं साधनों का भी पता लगा सकता है। यद्यपि मूल्यांकन एवं आकलन प्रक्रिया शिक्षक के समय के वृहद् भाग का उपयोग करती है, यह भूमिका कुछ ऐसी है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

6.7.6 राष्ट्र निर्माण की भूमिका

आज के बच्चे भविष्य के नवयुवक होते हैं, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न उत्तरदायित्वों को ग्रहण करते हैं। उनके कौशल तथा प्रभाविता बहुत हद तक उनके द्वारा विद्यालयों, तथा महाविद्यालयों में प्राप्त शिक्षा के प्रकार पर निर्भर करती है। यदि वे समीक्षात्मक एवं सृजनात्मक रूप में सोचने, निर्णय लेने एवं समस्या समाधान करने, जिओ और जीने दो की योग्यता विकसित कर लिए हैं तब यह उनको पढ़ाने वाले

शिक्षकों के कारण है। यदि वयस्कों के रूप में वे स्वयं की देखभाल के योग्य हैं, अपने द्वारा निवास किये जा रहे समुदाय की सहायता के योग्य हैं, निष्ठा के साथ राष्ट्र की सेवा तथा इसकी उन्नति एवं ख्याति के योग्य हैं तब पुनः यह उनको पढ़ाने वाले शिक्षकों के कारण है। पुनः यदि आजकल के नागरिक कार्य का सही निष्पादन करते हैं वे चाहे जहाँ हैं तथा जिस स्थिति में है यह उनको पढ़ाने वाले शिक्षकों के कारण है।

इस प्रकार आदर्श शिक्षक राष्ट्र निर्माता, योजनाकर्त्ता, निर्णयकर्त्ता, अभिप्रेरक, कक्षा–कक्ष प्रबंधक, पाठ्यचर्या प्रदानकर्त्ता तथा मूल्यांकन कर्त्ता की अपनी भूमिकाओं को जानते हैं। अतः वे आत्यन्तिक निष्ठा तथा भक्ति के साथ अपनी भूमिकाओ के निर्वाह की स्वयं की क्षमता हेतु अपनी योग्यता के अंतर्गत सभी युक्तियों को अपनाते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें (4)

नोट : (अ) अपने उत्तरों को दिए गये प्रत्येक विषय के पश्चात् रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब) अपने उत्तरों की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से कीजिए।

1. निम्नलिखित शब्दों को एक–एक वाक्यों में परिभाषित कीजिए।

अ) योजना

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ब) कक्षा–कक्ष प्रबंधन

.....

.....

.....

.....

.....

स) पाठ्यचर्या प्रदायन

.....

.....

.....

.....

.....

2. एक उत्पादक अधिगम परिवेश निर्माण का क्या अर्थ होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3. आकलन एवं मूल्यांकन शिक्षण के अभिन्न अंग क्यों होते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6.8 शिक्षण एवं अधिगम में संबंध

हम अब तक शिक्षक एवं शिक्षण से संबंधित कई पक्षों जैसे शिक्षक की विशेषताएं, शिक्षण–कौशल एवं दक्षताएं तथा शिक्षकों की विविध भूमिकाओं पर विमर्श कर चुके हैं। अब शिक्षण एवं अधिगम में संबंध पर कुछ विमर्श किया जाए। हमारा शिक्षार्थियों के रूप में अतीत का अनुभव प्रदर्शित करता है कि शिक्षण एवं अधिगम में बहुत अधिक संबंध है।

शिक्षकों द्वारा पढ़ाये जाने की विधि बहुत अधिक सीमा तक विद्यार्थियों के अधिगम को निर्धारित करती है। सफल शिक्षक जानते हैं कि विद्यार्थी उनके द्वारा शिक्षण पर तभी ध्यान केंद्रित करते हैं जब उनके शिक्षण प्रासंगिक एवं रोचक होते हैं। इसके विपरीत जब विद्यार्थी यह समझते हैं कि उनका शिक्षण अप्रासंगिक है तब वे इसके प्रति ध्यान केंद्रित करने में अनिच्छुक होते हैं। हम जानते हैं कि विद्यार्थी वर्तमान में जो अधिगम करते हैं, वह भविष्य के लिए होता है जब वे अपने उत्तरदायित्वों को ग्रहण करते हैं। अतः कक्षाकक्ष में उनके समय को अनुपयोगी कार्यों में नष्ट नहीं किया जाना चाहिए। इस प्रकार शिक्षकों को यह समझने की आवश्यकता है कि वर्तमान में कक्षाकक्ष में वे जो अध्यापन करते हैं वह न केवल उनके लिए भविष्य में उपयोगी होना चाहिए अपितु इसे इस प्रकार से पढ़ाया जाना चाहिए कि वे दीर्घ काल तक याद रखें। यह केवल तभी संभव है जब शिक्षक शिक्षण–विधियों, अधिगम अनुभवों तथा गतिविधियों का समुचित रूप से चयन करते हैं। जब विद्यार्थी यह समझते हैं कि शिक्षक द्वारा किया जा रहा शिक्षण उपयोगी तथा रोचक दोनों हो तब वे एकाग्रचित होंगे तथा अधिगम की घटना होगी।

अनुभवी शिक्षक जानते हैं कि शिक्षण की विद्यार्थी केंद्रित–विधियाँ, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता हेतु उत्तम अवसर प्रदान करती हैं। केवल जब विद्यार्थी प्रक्रिया में सक्रिय रूप में सम्मलित होते हैं, वे एकाग्र होंगे एवं स्वयं के ज्ञान एवं कौशलों को सरलतापूर्वक निर्मित करने में सक्षम होंगे। एकाग्रता उत्तम समझ

की ओर अग्रसर करती है तथा उनके पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ने हेतु अवसर को बढ़ाती है। आदर्श शिक्षक इस तथ्य को समझते हैं। अतः वे व्याख्यान एवं प्रदर्शन जैसी वर्णनात्मक विधियों द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाने की आदत का त्याग करते हैं तथा विद्यार्थी केंद्रित–विधियों जैसे परिचर्चा, भूमिका निर्वाह, मस्तिष्क उद्वेलन इत्यादि का उपयोग करते हैं। विद्यार्थियों की सहभागिता जितनी अधिक होगी अधिगम–परिणाम उतना ही अच्छा होगा।

उद्दीपन परिवर्तन भी उत्तम अधिगम–परिणाम को लाने हेतु अन्य विधि है। यदि शिक्षक प्रतिदिन एक समान तकनीकों, रणनीतियों या विधियों का उपयोग करना जारी रखते हैं तो विद्यार्थी ऊबने के लिए बाध्य होते हैं। तब वे स्वाभाविक रूप से एकाग्र होने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसकी अनुपस्थिति में मस्तिष्क में कुछ भी प्रवेश नहीं कर सकता है। इस समस्या पर नियंत्रण तथा अधिगम को अधिक आनन्ददायी बनाने हेतु शिक्षकों को अधिसंख्य तकनीकों एवं विधियों पर अधिकार प्राप्त करना होगा। यदि वे उसे करते हैं तो वे विषय–वस्तु की प्रकृति तथा इसे पढ़ाने के उद्देश्यों पर ध्यान देकर समुचित के चयन तथा उपयोग द्वारा अपने शिक्षण को बहुत रोचक बना सकते हैं। उदाहरण के लिए शिक्षक परिचर्चा द्वारा किसी प्रकरण को आरंभ कर सकते हैं जिसे बाद में वर्णन द्वारा आगे बढ़ाया जा सकता है तथा इसके पश्चात् प्रश्नोत्तर सत्र आदि द्वारा इसे आगे बढ़ाया जा सकता है। वे श्रव्य–दृश्य माध्यम, मानव अन्तःक्रिया माध्यम, प्रिंट माध्यम, अनुकृति इत्यादि जैसे बहुसंख्य माध्यमों का भी उपयोग कर सकते हैं। विभिन्न तकनीकों एवं माध्यमों की सहायता एवं उपयोग द्वारा अधिगम को अधिक आनन्ददायी एवं उत्पादक बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों को एकाग्रता में सरलता होगी, परिणाम स्वरूप उत्तम अधिगम होगा।

जैसा कि अधिगम में आपका अनुभव यह प्रदर्शित किया होगा कि शिक्षकों द्वारा शिक्षण हेतु प्रयुक्त अधिकांश विधियाँ जिन्हें शिक्षक उपयोग करते हैं, वे विद्यार्थियों के लिए अधिगम की विधियाँ भी हैं। प्रायः सभी विधियाँ जिनका कि प्रयोग शिक्षक करते हैं उनका ज्ञान एवं कौशलों की रचना से स्पष्ट या अस्पष्ट संबंध होता है। एक विद्यार्थी के रूप में आप अपने अधिगम हेतु उन विधियों का उपयोग कर सकते हैं। इसका आशय है कि आपके अधिगम के अपने भंडार में कई रणनीतियाँ हैं। यदि अधिक से अधिक अधिगम की रणनीतियाँ आपके प्रयोग में हैं तब अधिक प्रभाविता के साथ विभिन्न प्रकार के अधिगम की पूर्ति हेतु आपको अवसर अधिक से अधिक होंगे। उदाहरण के लिए अधिगम केंद्रित विधियाँ जैसे पृच्छा, खोज, परिचर्चा, प्रश्नविधि, भूमिका निर्वाह आदि जिनका शिक्षक शिक्षण हेतु उपयोग करते हैं विद्यार्थियों हेतु अधिगम की विधियाँ भी होती हैं। आप शिक्षकों द्वारा शिक्षण हेतु प्रयुक्त चरणों का अनुकरण कर सकते हैं तथा इनका उपयोग स्व अधिगम हेतु कर सकते हैं।

शिक्षण एवं अधिगम की विधियाँ जिन्हें हमने अब तक देखा है वे निर्विवादित रूप से संबंधित हैं। शिक्षकों द्वारा शिक्षण तथा विद्यार्थियों द्वारा अधिगम के मध्य संबंध स्वीकार करने योग्य है। अधिक से अधिक शिक्षण की विद्यार्थी केंद्रित विधियों को प्रचलन में लाना तथा अधिकांश उद्दीपन परिवर्तन को लाकर शिक्षक विद्यार्थियों के उत्तम अधिगम में सहायता कर सकते हैं।

6.8.1 चिन्तनशील शिक्षण

चिन्तनशील शिक्षण एक ऐसी शिक्षण विधि है जिसमें शिक्षक चिन्तन की सहायता से अपने विद्यार्थियों को उत्तम अधिगम में सहायता करते हैं। चिन्तन किसी व्यक्ति के अनुभव को पुनर्निर्मित करने की प्रक्रिया होती है जब यह पूर्ण हो जाता है तथा इसे सुधार की दृष्टि से चिन्तन किया जाता है। इस प्रकार चिंतन शिक्षार्थियों को उनके स्वयं के अनुभवों के मानसिक प्रत्यास्मरण, उनके स्वयं के कार्यों के विश्लेषण एवं मूल्यांकन तथा उनसे सीख लेने हेतु विपुल अवसर प्रदान करता है। क्रमबद्ध रूप से उजागर करने, प्रश्न करने, स्वरूप निर्माण सीमाओं को जानने तथा अपने कार्यों में सुधार करने हेतु चिंतनशील शिक्षण से अच्छा अन्य कोई उपकरण नहीं है। जैसा कि हम जानते हैं कि जब हम किसी अनुभव को ले रहे होते हैं तब उस कार्य पर चिंतन करना हमारे लिए असंभव होता है। जब कार्य समाप्त हो जाता है, तब हम इस पर चिंतन करने तथा सही और गलत का पता लगाने की स्थिति में होते हैं। चिंतन से प्राप्त अंतर्बुद्धि के आलोक में हम किसी कार्य में दक्षता के वांछित स्तर की प्राप्ति तक हम कार्य को बार–बार पुनर्संरचित तथा पुनरावृत्ति कर सकते हैं।

अनुभव के प्रत्यास्मरण, समीक्षात्मक रूप से ध्यान देने तथा अपने कार्यों में सुधार हेतु विधियों को जानने की इस विधि को अधिकांश विद्वानों एवं अभ्यासकर्त्ताओं द्वारा सहायक माना गया है। इनमें से कुछ ने प्रतिमानों को प्रस्तुत किया है, जो हमें शिक्षण विधि के रूप में इनके प्रयोग हेतु सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त, कोर्थगेन तथा केसेल (1999) द्वारा प्रतिपादित प्रतिमान जिसे संक्षिप्त रूप में ALACT के रूप में जाना जाता है, शिक्षण के उद्देश्य हेतु बिल्कुल उपयुक्त है। ALACT का विस्तृत रूप निम्नलिखित है –

A-Action (कार्य)

L-Look back (पीछे देखना)

A-Awareness (महत्त्वपूर्ण पक्षों की जानकारी)

C-Creating Alternative methods of action (कार्य की वैकल्पिक विधि का निर्माण)

T-Trial (प्रयास)

उपरोक्त प्रतिमान जिसे आपने देखा हैं इसमें पाँच चरण हैं। प्रत्येक चरण का विधि के उदाहरण के साथ निम्नलिखित रूप में व्याख्यायित किया गया है, जिसमें शिक्षक चिंतन द्वारा अपने प्रशिक्षु शिक्षकों के अभ्यास शिक्षण की योग्यता में सुधार का प्रयास कर रहे हैं। अभ्यास शिक्षण–सत्र के आरंभ से पूर्व शिक्षक अपने प्रशिक्षुओं को चिंतनशील शिक्षण विधि का प्रयोग कर उनकी शिक्षण योग्यता के सुधार हेतु आवश्यक सभी सैद्धांतिक पक्षों को समझाते हैं।

अब हम एक–एक कर के प्रत्येक चरण की व्याख्या करेंगे –

i) **कार्य** – प्रशिक्षु एक प्रकरण का चयन करते हैं, पाठ की योजना बनाते हैं तथा शिक्षक द्वारा दिए गये निर्देश के अनुसार शिक्षण करते हैं।

ii) **पीछे देखना**– जब पाठ समाप्त हो जाता है तब विद्यार्थी पाठ के प्रत्येक चरण को अपने मन में पुनर्संरचित करते हैं तथा इस पर चिंतन करते हैं। पहला

प्रस्तावना होता है। चिंतन की सहायता हेतु वे कुछ प्रश्नों जैसे ''क्या प्रस्तावना उपयुक्त थी?'' को निर्मित कर सकते हैं। क्या इसने विद्यार्थियों को प्रकरण से उनके पूर्व ज्ञान को जोड़ने में सहायता की? प्रस्तावना की सीमाएँ क्या थीं? आदि। इस प्रकार वे प्रत्येक चरण का प्रत्यास्मरण, प्रश्न करना, अपनी क्षमताओं एवं सीमाओं पर चिंतन तथा इसका पता लगाते हैं। इस प्रकार वे प्रत्येक स्तर की सीमाओं एवं क्षमताओं की जानकारी प्राप्त करते हैं।

iii) **आवश्यक पक्षों की जानकारी**– उपरोक्त वर्णित चिंतन के परिणामों के रूप में प्रशिक्षु अपने कार्य के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों के विषय में ठोस जानकारी प्राप्त करते हैं।

iv) **कार्य की वैकल्पिक विधियों का निर्माण**– चिंतन द्वारा प्राप्त अंतर्बुद्धि के आलोक में प्रशिक्षु अपनी सीमाओं पर नियंत्रण की वैकल्पिक विधियों का निर्माण करते हैं।

v) **प्रयास**– जब नवीन तकनीकों एवं प्रतिमानों के उपयोग द्वारा पुनर्संरचना कर ली जाती है तब वे पुनः एक बार शिक्षण करते हैं। पुनर्संरचना एवं पुनर्शिक्षण की यह प्रक्रिया शिक्षक के निर्देशन में तब तक चलती रहती है जब तक कि वे अभ्यास शिक्षण में दक्षता के पर्याप्त स्तर को नहीं प्राप्त कर लेते हैं। शोध द्वारा यह पाया गया है कि चिंतनशील शिक्षण प्रशिक्षु–शिक्षकों की शिक्षण योग्यता को सुधारने में बहुत महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावी है। इसी प्रकार, इसका उपयोग किसी कार्य में वृद्धि हेतु किसी व्यक्ति द्वारा किसी कार्य में आवश्यक सुधार हेतु किया जा सकता है। शिक्षण या अधिगम के साधन के रूप में चिंतन के उपयोग के कई लाभ हैं। यह प्रयोजनों एवं परंपराओं के स्तर से समीक्षात्मक एवं सृजनात्मक चिन्तन द्वारा निर्देशित हमारे कार्यों के स्तर तक ले जाने में हमारी सहायता कर सकता है। यह गहन समझ तथा अधिक से अधिक धारणीयता हेतु अग्रसर करने के लिए हमारे द्वारा सुने तथा देखे गए के अभ्यास में हमारी सहायता भी कर सकता है। शिक्षण एवं अधिगम हेतु यह विधि अब बहुतायत से प्रयुक्त हो रही है जिससे यह शिक्षा में एक मूलमंत्र हो चुकी है।

अपनी प्रगति की जाँच करें (5)

नोट : (अ)अपने उत्तरों को दिए गये प्रत्येक विषय के पश्चात् रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब)अपने उत्तरों की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से कीजिए।

1. निम्नलिखित वक्तव्यों को एक–एक वाक्य में परिभाशित कीजिए।

अ) उद्दीपन परिवर्तन

.....

.....

.....

.....

.....

ब) शिक्षण की सक्रिय विधियाँ

.....

.....

.....

.....

.....

स) चिन्तनशील शिक्षण

.....

.....

.....

.....

.....

2. शिक्षण की सक्रिय विधियाँ शिक्षण की निष्क्रिय विधियाँ की तरह अच्छी क्यों नहीं हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3. शिक्षण एवं अधिगम के मध्य किन्हीं दो संबंधों को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4. शिक्षण विधि के रूप में चिन्तन के उपयोग के लाभों के विशय में आप क्या सोचते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6.9 सारांश

शिक्षक पेशेवर एवं विशेषज्ञ होते हैं, जिनकी नियुक्ति बच्चों को जीवन हेतु तैयार करने के लिए होती है। शिक्षण शिक्षार्थियों के संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोगत्यात्मक क्षेत्रों में वांछित परिवर्तन लाने हेतु एक प्रयास होता है। यह अधिगम की सहायता की एक प्रक्रिया है। यदि शिक्षक प्रवीणता एवं प्रभाविता के साथ अपना कार्य करने वाले हैं, तब उन्हें विषय वस्तु पर अधिकार, शिक्षण शास्त्र का ज्ञान, शैक्षिक लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का ज्ञान, पाठ्यचर्या का ज्ञान, अधिगम होने के संदर्भों का ज्ञान तथा शिक्षार्थी एवं उनकी विशेषताओं का ज्ञान जैसी विशेषताओं से युक्त होना चाहिए। उन्हें विभिन्न शिक्षण कौशलों एवं दक्षताओं के प्रयोग में महारत भी होनी चाहिए। केवल जब शिक्षकों में ये सभी विशेषताएँ एवं योग्यताएँ हैं तब वे अनुदेशन की योजना, कक्षा–कक्ष में उत्पादक अधिगम परिवेश के निर्माण, विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा, कक्षा–कक्ष प्रबंधन पाठ्यचर्या प्रदायन तथा विद्यार्थी निष्पादन का आकलन एवं मूल्यांकन जैसी विविध भूमिकाओं के निर्वाह की स्थिति में होंगे। उन्हें विभिन्न शिक्षण कौशलों तथा दक्षताओं एवं चिन्तनशील शिक्षण जैसी नवीन विधियों को संचालित करने में सुविज्ञता भी होनी चाहिए। उपरोक्त सभी के अतिरिक्त शिक्षकों को शिक्षण एवं अधिगम के मध्य संबंध को भी जानना चाहिए। तब वे सर्वोत्तम संभव स्तर तक अनुदेशन के कार्य को करने में सक्षम होंगे।

6.10 इकाई अन्त अभ्यास

1. कक्षाकक्ष का प्रबंधन क्यों महत्त्वपूर्ण है?
2. आकलन एवं मूल्यांकन अनुदेशन के अभिन्न अंग हैं। चर्चा कीजिए।
3. योजना क्या है? यह शिक्षण में शिक्षकों की सहायता कैसे करती है?
4. किस अर्थ में शिक्षक राष्ट्र निर्माता है?
5. शैक्षिक संदर्भों के ज्ञान का क्या अर्थ है?
6. संक्षिप्त ALACT का विस्तृत रूप क्या है? प्रत्येक अक्षर का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

6.12 आप की प्रगति जाँच के उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच करें (1)

1. (अ) शिक्षण शिक्षार्थियों में परिवर्तनों को प्रोत्साहित करने हेतु प्रयास की एक प्रक्रिया है। (ब) अनुदेशन एक प्रक्रिया है जिसमें प्रबंधन तकनीक तथा शिक्षण विधियों दोनों का कुशल प्रयोग सम्मिलित होता है। (स) प्रशिक्षण एक प्रक्रिया है, जिसमें मुख्यतः एक विशिष्ट कार्य या पेशे हेतु शिक्षार्थियों को तैयार करने पर ध्यान दिया जाता है।
2. शिक्षण प्रत्यक्ष अंतः क्रिया या प्रदत्त कार्यों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से किया जा सकता है। शिक्षण के विपरीत अनुदेशन, शिक्षण एवं कक्षा–कक्ष प्रबंधन दोनों को सम्मिलित करता है।
3. प्रशिक्षण का केन्द्र मुख्यतः एक विशिष्ट कार्य या पेशे हेतु शिक्षार्थियों को तैयार करने में निहित होता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें (2)

1. (अ) लक्ष्य विद्यार्थियों द्वारा पाठ्यक्रम की समाप्ति पर पूर्ण करने हेतु योग्य होने के लिए किया गया सामान्य कथन होता है। (ब) पाठ्यचर्या का आशय विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रयोजन हेतु निर्मित विशय–वस्तु एवं अधिगम अनुभवों की एक संपूर्ण सूची है। (स) शिक्षण–शास्त्र व्यावसायिक अभ्यास तथा शैक्षिक अध्ययन के क्षेत्र के रूप में शिक्षण है।
2. विषयवस्तु प्रवीणता/विशेषज्ञता का अर्थ विशय के गहन ज्ञान से है। यदि एक शिक्षक विषय की सभी इकाइयों के मुख्य तथा उपप्रकरणों तथा इकाइयों के रूप में उनको एक साथ एकीकृत करने के अंतर्संबंधों को जानता है तब उसे विषयवस्तु प्रवीणता होना माना जाता है।
3. विषयवस्तु प्रवीणता/विशेषज्ञता, शिक्षणशास्त्र का ज्ञान, लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का ज्ञान, शिक्षार्थी एवं उनकी विशेषताओं का ज्ञान तथा आकलन एवं मूल्यांकन का ज्ञान।
4. अन्तःवैयक्तिक ज्ञान शिक्षक को उसके विद्यार्थियों से उत्तम संबंध बनायें रखने में शिक्षक की सहायता करता है। यह शिक्षा की गुणवत्ता सुधार हेतु मानव संसाधनों की प्राप्ति एवं उपयोग में उसकी सहायता भी करेगा।

अपनी प्रगति की जाँच करें (3)

1. (अ) दक्षता विशिष्ट कौशलों के युग्म के अवलोकनीय प्रदर्शन का वर्णन करता है। (ब) प्रतीक्षा–समय का अर्थ कुछ क्षणों हेतु मौन के प्रयोग का कौशल है, जो विद्यार्थी के समक्ष एक प्रश्न रखने का अनुकरण करता है, जो उत्तर कहलाता है। (स) समापन कौशल का अर्थ कक्षा के दौरान पढ़ाये गये का सारांश कार्य है।
2. (अ) शिक्षण की विशय वस्तुओं का चयन तथा तार्किक व्यवस्था।

   (ब) अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का कथन।
3. यदि अनुदेशनात्मक उद्देश्य व्यावहारिक पदों में प्रयुक्त होते हैं, तब यह शिक्षार्थियों को शिक्षक के अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को सुस्पष्ट एवं ठीक–ठीक समझने में सहायता करेगा। यह शिक्षकों हेतु आकलन को सरल भी बनायेगा।

अपनी प्रगति की जाँच करें (4)

1. (अ) योजना का अर्थ विद्यार्थियों के चरों को तथा पूर्व–निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शिक्षण हेतु प्रक्रिया का चरणबद्ध विकास है। (ब) कक्षा–कक्ष प्रबंधन को कक्षा–कक्ष में अधिगम की सर्वोत्कृष्टता के दृष्टिकोण से विद्यार्थी सजगता के परिवर्तन के साथ करना होता है। (स) पाठ्यचर्या प्रदायन का अर्थ है पाठ्यचर्या में निर्दिष्ट उद्देश्यों के अनुसार पाठ्यचर्या की विषय वस्तु का प्रभावी क्रियान्वयन।
2. शिक्षक विद्यार्थियों को स्वायत्तता, सहभागिता एवं शामिल होने के अधिक अवसर प्रदान करने द्वारा परिचर्चा, परियोजना, भूमिका निर्वाह इत्यादि जैसी अधिगम की सक्रिय विधियों के प्रयोग तथा दंडित या उपहास के भय के बिना स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचारों की अभिव्यक्ति हेतु अवसर प्रदान कर विद्यार्थियों को अधिक अवसर प्रदान कर कक्षा–कक्ष में उत्पादक परिवेश को निर्मित कर सकते हैं।

3. आकलन एवं मूल्यांकन शिक्षकों को उनके प्रयास द्वारा अपेक्षित परिणाम की प्राप्ति को जानने में सहायता करेगा। यह शिक्षकों को वांछित प्रतिपुष्टि प्रदान करने का अवसर तथा सुधार की विधियों एवं साधनों की प्राप्ति हेतु अवसर प्रदान करेगा। यह शिक्षाकों को अपने शिक्षण में वांछित परिवर्तन लाने हेतु सहायता भी करेगा। अतः आकलन एवं मूल्यांकन ऐसे पक्ष हैं, जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

अपनी प्रगति की जाँच करें (5)

1. (अ) उद्दीपन परिवर्तन कथन का अर्थ विशय–वस्तु की प्रकृति तथा इसके शिक्षण करने के उद्देश्यों को देखते हुए उपयुक्त तकनीकों एवं विधियों के चयन एवं उपयोग की प्रक्रिया है। (ब) शिक्षण की सक्रिय विधियों का अर्थ व्याख्यान एवं प्रदर्शन जैसी वर्णनात्मक विधियों द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाने की आदत है, जिसमें शिक्षक सक्रिय तथा विद्यार्थी निष्क्रिय होते हैं। (स) चिंतनशील शिक्षण एक ऐसी विधि है, जिसमें शिक्षक चिंतन द्वारा चीजों को अच्छी तरह अधिगम करने में अपने विद्यार्थियों की सहायता करते हैं।
2. व्याख्यान एवं प्रदर्शन जैसी शिक्षण की सक्रिय विधियों में शिक्षक सक्रिय तथा विद्यार्थी निष्क्रिय होते हैं। इसके विपरीत परिचर्चा, भूमिका निर्वाह आदि जैसी विद्यार्थी केन्द्रित विधियों में विद्यार्थी सक्रिय होते हैं अतः वे अधिगम के उत्तम अवसर प्रदान करते हैं।
3. शिक्षण की विद्यार्थी केन्द्रित विधियाँ शिक्षक केन्द्रित विधियों से उत्तम अधिगम प्रदान करती हैं। इसी प्रकार शिक्षण में उद्दीपन परिवर्तन का अभ्यास उत्तम अधिगम हेतु होता है।
4. किन्हीं अन्य विधियों के विपरीत चिंतनशील शिक्षण किसी कार्य में वांछित सुधार तथा वृद्धि हेतु किसी भी व्यक्ति द्वारा प्रयोग किया जा सकता है। यह अभ्यास हेतु हमारी सहायता भी कर सकता है कि हमने गहन समझ तथा वृहत् धारणीयता हेतु अग्रसर करने के विषय में क्या सुना और देखा है।

6.11 संदर्भ ग्रन्थ

- अरेन्ड्स, आर. आई. (1994). लर्निंग टू टीच.न्यूयॉर्क : मैक ग्रोव–हिल्स, आई.एन. सी.
- कॉटरेल, एस. (2003). द स्टडी स्किलस हैन्डबुक. न्यूयॉर्क : पॉलग्रेव मैकमिलन.
- जोसेफ, के.एस. (2003). लर्निंग टू एडूकेट. बड़ौदा : गोल्ड रॉक पब्लिकेशन.
- कोर्थाजेन, एफ, ऐन्ड कैसेल्स, जे. (1999), लिकिंग थियरी ऐन्ड प्रैक्टिसः चेंजिंग द पेडागाजी ऑफ टीचर एजूकेशन। एजूकेशनल रिसर्चर, 28 (4), 4–17।
- लॉगरैन, जॉन. (2006). डेवेलॅपिन्ग ए पेडागोजी ऑफ टीचर एजूकेशन : अंडरस्टैंडिन्ग टीचिन्ग ऐण्ड लर्निंग अबाउट टीचिन्ग. लंदन : राउटलेज.
- मूर, के.डी. (2005) इफेक्टिव इन्सट्रक्शनल स्ट्रेटेजीज़, कैलिफोर्निया, सेज पब्लिकेशन्स, आई एन सी।